Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय परिप्रेक्ष्य में वृद्धावस्था की सामाजिक चुनौतियाँ : एक समकालीन विश्लेषण

डॉ. श्रुति त्रिपाठी*

* सहेयक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) क्रांतिवीर तात्या टोपे विश्वविद्यालय, गुना (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – वृद्धावस्था जीवन का ऐसा चरण है जहाँ व्यक्ति भौतिक, मानसिक तथा सामाजिक रूप से सक्रिय भूमिका कम निभाने लगता है। यद्यपि वह सक्रिय भूमिका नहीं निभाता, पर समाज में पूर्व में निभाई गई महत्तवपूर्ण भूमिका के आधार पर विश्रांति और सम्मान की कामना करता है। भारतीय संस्कृति में इस अवस्था को 'संन्यास आश्रम' के रूप में देखा गया है, जहाँ अनुभव, ज्ञान और धार्मिक चेतना की विशेष भूमिका होती है। परंतु बदलती आर्थिक–सामाजिक व्यवस्था, शहरीकरण, विघटित होते पारिवारिक ढाँचे तथा प्रतिस्पर्धात्मक जीवन शैली ने वृद्धजनों की सामाजिक स्थिति को चुनौतीपूर्ण बना दिया है।

यह शोध–पत्र आधुनिक भारतीय समाज में वृद्धावस्था से संबंधित सामाजिक, आर्थिक तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का विश्लेषण करता है और समाधान की संभावनाओं पर चर्चा करता है।

शोध की आवश्यकता और उद्देश्य

आवश्यकता– भारत में जनसंख्या का वृद्धिकरण तेज गति से हो रहा है। वर्ष 2021 में 60 आयु वर्ग की जनसंख्या लगभग 13.8 करोड़ थी, जो 2036 तक दोगुनी होने के अनुमान हैं। इस समूह के प्रति जागरूकता, नीति–निर्माण तथा संरचनात्मक समर्थन अत्यावश्यक होता जा रहा है।

उद्देश्य:

1. भारतीय समाज में वृद्धजनों की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण।
2. सरकारी एवं सामाजिक स्तर पर वृद्धजनों की समस्याओं की पहचान।
3. नीतिगत उपायों की प्रभावशीलता पर विचार।
4. समाधान हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन की पद्धति – यह शोध मुख्यत: वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक–आलोचनात्मक पद्धति पर आधारित है।

1. आधार स्रोत– HelpAge India रिपोर्ट्स, NSSO डेटा, सरकारी योजनाओं की रिपोर्ट, अकादमिक शोध–पत्र तथा समाचार–पत्रध्पत्रिकाएँ।

2. विश्लेषण का दायरा– सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य, कानून व नीतिगत परिप्रेक्ष्य से।

वृद्धावस्था की भारतीय अवधारणा – भारतीय संस्कृति में वृद्धजन परिवार की रीढ़ माने जाते हैं। उनके अनुभव और मूल्यबोध से परिवार और समाज का मार्गदर्शन होता आया है। प्राचीन ग्रंथों में 'मातृदेवो भव', 'पितृदेवो भव' जैसे विचार उनकी गरिमा को प्रकाशित एवं प्रमाणित करते हैं। चार आश्रमों में अंतिम 'संन्यास आश्रम' वृद्धावस्था का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ आत्मचिंतन, मोक्ष की ओर गमन और समाज को उपलब्ध ज्ञान देने की अवस्था होती है। वृद्धजनों के प्रति ये दृष्टिकोण अब शहरीकरण और पारिवारिक टूटन के कारण खोने लगे हैं। नई पीढ़ी को वे बोझ जैसे लगने लगे हैं, जिसके कारण समाज का यह महत्तवपूर्ण घटक अदृश्य चुनौतियों का सामना कर रहा है।

प्रमुख सामाजिक चुनौतियाँ

आर्थिक असुरक्षा– अधिकांश वृद्धजन बेरोजगार, पेंशन–विहीन या अल्प आय वाले होते हैं। चिकित्सा खर्च, जीवन–निर्वाह, घर का रख–रखाव आदि उनकी सामर्थ्य से बाहर होते हैं।

1. वृद्ध, विशेषकर असंगठित क्षेत्र से आने वाले व्यक्ति वित्तीय योजनाओं से वंचित रहते हैं।
2. पेंशन योजनाओं के लाभार्थियों का अनुपात ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यंत कम है।

स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ– जैसे–जैसे आयु बढ़ती है, वृद्धजन हृदय रोग, मोतियाबिंद, अस्थि–संबंधी रोग, मानसिक रोग जैसे अल्जाइमर, डिमेंशिया आदि से पीड़ित होते हैं।

1. मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा गंभीर है।
2. बुजुर्ग मानसिक अवसाद, अकेलापन, नींद न आने जैसी समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं।

सामाजिक उपेक्षा एवं दुव्यवहार– HelpAge India के सर्वेक्षण अनुसार 2023 में 64% वृद्धों ने किसी न किसी प्रकार की उपेक्षा का अनुभव किया –

1. मानसिक उत्पीड़न
2. संपत्ति को लेकर झगड़े
3. घर से निष्कासन
4. भावनात्मक अलगाव से उत्पन्न अवसाद

ग्रामीण बनाम शहरी वृद्धावस्था:

1. ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक समर्थन अपेक्षाकृत बेहतर है, लेकिन सुविधाओं का घोर अभाव है।
2. शहरी क्षेत्रों में भले ही चिकित्सा व संस्थागत सहायता उपलब्ध हो, परंतु वृद्ध अकेलेपन, निजता की कमी और उपेक्षा से जूझते हैं।

वृद्ध महिलाओं की समस्याएँ– वृद्धावस्था और महिला – ये दोनों मिलकर चुनौतियों को और बढ़ा देते हैं। पुरुष प्रधान समाज में विधवापन अपने आप

में सामाजिक अभिशाप समझा जाता है और व्यवहार में उन्हें सामान्यत: दूर रखा जाता है, जो उनके लिए हर दृष्टि से पीड़ादायक होता है।

1. संपत्ति में अधिकार की स्थिति पुरुषों की अपेक्षा कमजोर रहती है।
2. महिला होने के कारण स्वास्थ्य व पोषण की उपेक्षा – बहुआयामी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं।
3. लिंग आधारित भेदभाव वृद्धावस्था में और तीव्र हो जाता है।

नीतिगत प्रयास एवं उनकी व्यावहारिक सीमाएँ

सरकारी योजनाएँ:

1. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना (IGNOAPS)
2. अटल पेंशन योजना (APY)
3. राष्ट्रीय वयोश्री योजना
4. वरिष्ठ नागरिक कल्याण कोष
5. रिवर्स मॉर्गेज योजना

सीमाएँ:

1. लाभार्थियों को योजनाओं की जानकारी का अभाव।
2. योजनाओं के लाभ हेतु सरकारी प्रक्रिया और दस्तावेज जुटाना कठिन।
3. प्रशासनिक स्तर पर असंवेदनशीलता व भ्रष्टाचार।

सामाजिक और कानूनी प्रयास

सामाजिक पहल:

1. वृद्धजनों के लिए सामुदायिक केंद्र, डे-केयर संस्थाएँ, हेल्थ कैंप।
2. NGO, SWO और NSS जैसे संगठनों की भागीदारी।
3. स्कूलों में नैतिक शिक्षा, पीढ़ी-दर-पीढ़ी संवाद को प्रोत्साहन।

कानूनी पहल:

1. 'माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007'।
2. त्वरित न्याय हेतु ट्राइब्यूनल।
3. मातापिता की संपत्ति पर अधिकार की सुरक्षा।
4. संतान से भरण-पोषण की कानूनी मांग।
5. इसकी प्रासंगिकता को और मजबूत करने हेतु संशोधन प्रक्रिया प्रगति पर है।

समाधान एवं सुझाव

परिवार स्तर पर:

1. आदरभाव, संवाद, सहभागिता तथा भावनात्मक सहयोग – परिवार के स्तर पर वृद्धों के लिए सबसे अच्छा वातावरण बनाते हैं।
2. घर में वृद्धों को उनके अनुकूल जिम्मेदारी देना जिससे वे व्यस्त रहें और अपनी भूमिका निभाने का अनुभव करें।
3. परिवार के विकास में उनके योगदान को मान्यता देना।

नीति-निर्माण में सुधार:

1. पेंशन और चिकित्सा योजनाओं को सरल बनाना।
2. वृद्धजनों को डिजिटल रूप से साक्षर बनाना।
3. ग्रामीण क्षेत्रों तक सेवाओं की पहुँच।

सक्रिय वृद्धों के लिए:

1. मनरेगा जैसे श्रम के बजाय मानसिक कार्यों में नियुक्ति।
2. अनुभव-आधारित परामर्श या स्वैच्छिक सेवा योजनाओं में सहभागिता।

सामाजिक स्वीकृति एवं सक्रियता:

1. वृद्धों को क्लब, मंदिर, सामुदायिक लाइब्रेरी, योग केंद्र आदि से जोड़ना।
2. 'inter-generational bonding' हेतु परिवार-केंद्रित कार्यक्रम।

निष्कर्ष- वृद्धजन हमारे सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के संरक्षक हैं। यदि हम उनके अनुभव, भावना एवं अस्तित्व को सम्मानित करते हैं, तो यह केवल ऋण नहीं बल्कि समाज के लिए पुन: निवेश है।

वृद्धावस्था की गरिमा की रक्षा हेतु केवल सरकारी योजनाएँ ही नहीं, बल्कि परिवार और समाज को भी उद्देश्यपूर्ण सहभागिता निभानी होगी। 'वृद्धजन रूई का बोझ नहीं, वरन अनुभव की धरोहर हैं।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. HelpAge India Annual Survey Report - 2023
2. भारत सरकार – सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय।
3. Ageing in India: Challenges and Policy Responses, Economic and Political Weekly.
4. National Sample Survey Office (NSSO) Reports
5. World Health Organization Global Ageing Report
6. राष्ट्रीय वृद्धनीति, राष्ट्रीय वृद्धजन शिक्षा संसाधन केन्द्र, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
7. उमेश चन्द्र अग्रवाल,'बढ़ते बुजुर्ग, घटती सुरक्षा', पत्रिका कुरुक्षेत्र, 2021.

****